शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 फरवरी 2014

उपन्यासकार यशपाल और देश विभाजन की त्रासदी

प्रीति सोनी (शोधार्थी)
भोपाल, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

देश का विभाजन भारत के लिए घातक सिद्व हुआ। हिन्दी उपन्सायकारों ने विभाजन को आधार बनाकर उसकी त्रासदी का अपनी कृतियों में चित्रण किया है। वस्तुतः देश का विभाजन भारत की स्वतंत्रता और राष्ट्रीय उपलब्धि के लिए गृहण था जिसकी काली छाया में मानवता क्षत-विक्षत ही नहीं हुई वरन् सामाजिक विकास भी बाधित हुआ देशवासियों ने जो स्वतंत्रता का सुनहरा स्वप्न देखा था। वह भी धूमिल हो गया। धर्म निरपेक्ष समाज और भारत के संस्कृतिक वैविध्य का महत्व भी घट गया। देश विभाजन में विश्व की साम्राज्यवादी शक्तियों का हाथ रहा इनके इशारे पर पृथकतावादी संकीर्ण और साम्प्रदायिक कट्टरवादी धार्मिक तत्वों को बल मिला इसका परिणाम यह हुआ कि जिस समाजवादी स्वतंत्र भारत के लिए स्वाधीनता संग्राम के सैनानियों और शहीदों ने बलिदान दिये थे, वे निरर्थक हो गये। यही नहीं बढ़ते साम्राज्यवादी आर्थिक दबावों और वैश्विक बाजार, उपभोक्तावादी संस्कृति और साम्प्रदायकि दंगे आदि विभाजन की पृष्ठभूमि के आधार बने। भारतीय जनता विभाजन की इस त्रासदी को आज भी भोग रही है।

प्रस्तावना

यशपाल ऐसे कथाकार हैं जिनका बहुआयामी व्यक्तित्व और विराट कद है इनके उपन्यास मानव विकास के अवरोधक परम्पराओं और जीवन मूल्यों को अस्वीकारते हैं। इन्होंने उस सामंतवादी और पूंजीवादी शोषक समाज का बहिष्कार किया जिसने मनुष्य और समाज के बीच धर्म जाति और साम्प्रदायिकता की संकीर्ण मानसिकता के बीज बोये। यशपाल मानवतावादी है। उनकी दृष्टि में देश का विभाजन मानवता पर कुठाराघात है। यशपाल जी के झूठा-सच उपन्यास में देश विभाजन की त्रासदी का मूल्यांकन अपने भौतिकवादी चिंतन की कसौटी पर किया गया है। यही चिंतन देश के विभाजन का आधार बना। भारतीय जनता की इच्छा के विपरीत भी लीग और कांग्रेस ने सत्ता के लिए सुनियोजित ढंग से हिन्दुस्तान और पाकिस्तान दो राष्ट्रो की मांग रखी। जिससे देश के दो भाग हुए भारत और पाकिस्तान। इसका परिणाम यह हुआ कि संपूर्ण देश में हत्या, रक्तपात, हिंसा, लूटपाट, बलात्कार और बर्बरता का तांडव नृत्य हुआ। विभाजन की मानसिकता से ग्रसित जनता में साम्प्रदायिक जुनून सवार था। घृणा नफरत शक और अविश्वास आदि भारतीय जीवन को विषाक्त बना रहा था। भाईचारे की भावना और साझा विरासत का अंत होने लगा। इससे सामाजिक ढांचा ही बदल गया था। जनता अपने इतिहास और विरासत से अलग हो गयी। मानवीय मूल्यों का ह्रास हुआ। देशवासी आंतकित और आशंकित थे। देश के नेताओं द्वारा बिना पूर्व सूचनाओं के लोगों को देश छोडने को कहा गया। अतः जनता किंकर्तव्यविमूढ़ होकर घबराकर पाकिस्तान और हिन्दुस्तान की सीमा से आने जाने लगी। "लाखों नर नारी बाल वृद्वा पैदल ही अपना सामान लेकर देश की सीमा पर इधर से उधर संचरण करते रहे। लोगों को अपने सामने बहू बेटियों की इज्जत लुटते प्रियजनों के

कत्ल होते देखना पड़ा। यशपाल ने उपन्यास में ऐसे चित्र खींचे है जो ह्रदय विदारक हैं। पाकिस्तान से भारत आये लोगों की चिन्ता को लेखक ने महेन्द्र के माध्यम से व्यक्त किया है। लायलपुर मिटगुमरी, सरगोधा और शेखपुरा की सहारी आवादियों में सत्तर अस्सी प्रतिशत भूमि और आबादी सिखों और हिन्दुओं की है। ये पाकिस्तान में क्यों रहें। क्या वे लोग अपनी भूमि उठाकर हिन्दुस्तान ले जांऐ" ?(1) लुटे पिटे तथा गुम हुये लाखों लोग अपना प्रिय घर भूमि चल अचल संपित्त तथा परिवारी जनों को छोडकर गुमनामी की जिन्दगी बिताने के लिए चल दिये। उन्हें शरणार्थी बनकर शरणार्थी राहत शिविरों में पनाह लेनी पडी। अस्तु जड़ों से उखडे लोग विस्थापित हुए। "डॉ.गोपाल कृष्ण शर्मा के शब्दों में अमानवीय यातनाओं और साम्प्रदायिक दंगो की विभीषिका में मानवता आहत हुई। यशपाल का झूठा-सच उपन्यास देश विभाजन की त्रासदी का एक प्रमाणिक दस्तावेज है। जिसमें भारतीय समाज में होने वाली हलचलों परिवर्तनों और विभीषिकाओं को यथार्थ रूप में उजागर किया गया है। इसलिए यह झूठा-सच नहीं है सिर्फ सच है। और इसकी सच्चाई से इंकार नहीं किया जा सकता है।"(2) देश विभाजन के लिए कोई एक पक्ष जिम्मेदार नहीं है। इसके संदर्भ में विभाजन के कारणों को निम्नलिलिखत कारणों में बांटा जा सकता है। **ऐतिहासिक कारण** – यशपाल ने देश विभाजन के ऐतिहासिक कारणों को खोजते हुये कांग्रेस और मुस्लिम लीग की भूमिका को प्रकाशित किया। यद्यपि दोनों ही दल देश की स्वतंत्रता के लिए आंदोलनरत थे, किन्तु अंग्रेजों ने अपनी कूटनीति द्वारा इनके साथ दोयम दर्जे का व्यवहार किया। इन्होंने हिन्दू मुसलमानों में एक दूसरे के विरुद्ध, घृणा के बीज बोये इसके अतिरिक्त मुसलमानों में यह शंका थी कि आजादी के बाद देश में चुनाव होगा। उसमें हिन्दू ही जीतेंगे क्योंकि वह संख्या में अधिक है जीतकर वह मुसलमानों पर शासन करेंगे मुसलमानें को हिन्दुओं की गुलामी मंजूर नहीं थी। इसलिये वह मुस्लिम लीग के नेतृत्व में भारत विभाजन चाहते थे ऐतिहासिक परिस्थितियों के कारण हिन्दुओं और मुसलमानों में कटुता तथा अविश्वास उत्पन्न हो रहा था। मोहम्मद अली जिन्ना का तर्क था कि मुसलमान एक अलग कौम है। उनकी संस्कृति हिन्दुओं से अलग है। अपनी आकांक्षाओं और आदर्शों के अनुरूप रहने स्वशासन के लिए एक अलग देश मिलना ही चाहिए। मुस्लिम लीग के अधिकतर पक्षधरों का यही विचार था। द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात् ब्रिटेन में आर्थिक संकट गहराया। 1945 का शिमला सम्मेलन भी विफल रहा। ब्रिटिश साम्राज्यवाद के विरोध में स्वतंत्रता के लिए भारतीय जनता एकजुट होकर प्रदर्शन संघर्ष तथा विद्रोह कर रही थी, किंतु हमारे राष्ट्रीय नेताओं ने किसान मजदूर और व्यापक जनांदोलन की एकता को महत्व नहीं दिया। "राष्ट्रीय स्वाधीनता आंदोलन अपनी उंचाइयों पर पहुंचकर बिखराव की अवस्था में आ गया। अहिंसा आन्दोलन और क्रांतिकारी आंदोलन के वैचारिक मतभेद को अंग्रेज भलीभांति समझ चुके थे।" (3) नेताओं ने अंग्रेजों की गुलामी और फूटडालो की नीति का अनुकरण ही किया। अंग्रेजों की कूटनीति से भारतीय छले जाते रहे। अंग्रेज उनहें झूठा आश्वासन देते रहे कि सत्ता उन्हीं के हाथों में यथा समय सौंपी जायेगी। अंग्रेज शासकों और देशी राजनेताअें के विरुद्ध संपूर्ण देश में जन

आंदोलन हुआ। मजदूरों की हड़ताल व्यापक हो गई। दूसरी और कांग्रेस और लीग के नेता समझौते की ओर झुके उन्होंने केबीनेट मिशन और माऊन्टबेटन से सत्ता हस्तांतरण के लिये हाथ बढ़ाया। अतः व्यापक जनांदोलन विफल हो गया और निराशा की स्थिति में साम्प्रदायिकता की आग भड़क उठी। "सन् 1946 में साम्प्रदायिक दंगो में अगस्त में मुस्लिम लीग ने कलकत्ते में सीधी कार्रवाही का दिन मनाया तो बिहार में मुस्लिम विरोधी दंगे हुये जिसमें नरसंहार तो हुआ ही विभाजन का वातावरण भी निर्मित हुआ। कालान्तर में वही अपनी परिपक्व अवस्था में त्रासदी बना।" (4) **धार्मिक कारण**- धर्म धारण करने योग्य है परंतु जब उसे राजनीति से जोड़ दिया जाता है तब वह विकृत हो जाता है। हिन्दू धार्मिक क्षेत्र में रामायण, महाभारत और गीता से प्रेरणा प्राप्त करते हैं तथा मुसलमान कुरान तथा हदीस से। इसलिए आपसी मेल की अपेक्षा इनमें विभाजन की प्रवृत्ति अधिक है। राजनैतिक तथा धार्मिक विरोध हिन्दू मुसलमानों को एक दूसरे के निकट लाने की अपेक्षा गहराई से पृथक करते है। इन्हीं सब कारणों से देश विभाजन की त्रासदी हुई। "दूसरे मांऊटवेटन ने भारत को तथा कथित स्वतंत्रता भारत के विकास हेतु प्रदान नहीं की बल्कि अखण्ड भारत को खण्डित करने की साजिश रची गई। देश विभाजन में राज्यों की सीमायें भाषा सांस्कृतियों जाति के आधार पर तय नहीं की गई वरन् धर्म के आधार पर की गई।" (5) **आर्थिक कारण**- भारत विभाजन का कारण आर्थिक भी था मुस्लिम नेताओं के विभाजन के संदर्भ में अपने अपने निहित स्वार्थ थे। उनका विचार था कि अगर भारत एक देश के रूप में स्वतंत्र हुआ तो उनकी उन्नति के अवसर सीमित मात्रा में रहेंगे क्योंकि वह अल्प संख्यक मात्रा में है। पाकिस्तान बनने से उनको अपने देश में शासन करने नौकरियां पाने, उद्योग लाने, सेना में भर्ती होने के अवसर प्राप्त होंगे। साथ ही अपनी धार्मिक रीतिरिवाजों को अपनाने की स्वतंत्रता होगी। वह उन्नति भी कर सकेंगे। इन्हीं सब कारणों से भारत का विभाजन हुआ। **सामाजिक कारण**- यशपाल ने सामाजिक विसंगति पर भी दृष्टिपात किया पाकिस्तान का निर्माण धर्म के आधार पर ही हुआ था इसलिये वहां फौजी शासन ने ही सत्ता सम्हाली। मुसलमानों का धर्म उपासना विधि खानपान, रहनसहन, भाषा सभी कुछ हिन्दुओं से भिन्न था। इसलिए धार्मिक सहिष्णुता के अभाव में हिन्दुओं और मुसलमानों और उनके समुदाय में साम्प्रदायिकता की आग भड़क उठती थी तथा हिन्दु मुस्लिम दंगा होना, लूटपाट होकर जनहानि अधिक होती थी। इन कारणों से मुस्लिम समुदाय के लोगों को सदैव डर बना रहता था। उनकी शिक्षा-दीक्षा भी कम थी। इसलिए अशिक्षित होने के कारण किसी के भी बहकावे में जल्दी आ जाते थे। यशपाल के उपन्यास में सामाजिक यथार्थ के उस पक्ष का चित्रण किया गया है। जिसमें मध्यवर्ग की इच्छाओं और आकांक्षाओं का चित्रण अनुकूल दिखाई पड़ता है। मार्क्सवादी दृष्टिकोण होने के कारण वे सामाजिक संघर्ष में आर्थिक वैषम्य और सामंतवादी अर्थ व्यवस्था के शोषणचक्र को प्रधान मानते है। लेखक यह स्वीकार करता है कि जब तक वर्ण वैषम्य समाप्त नहीं होगा तब तक मानवीय चेतना अपने स्वस्थ रूप में विकसित नहीं हो सकती, क्योंकि सभी सामाजिक गतिविधियों के मूल में आर्थिक स्वार्थ निहित है। सामाजिक विसंगतियों तथा पुरानी नैतिक

मान्यताओं पर तीखा प्रहार करते हुये उन्होंने मध्यवर्गीय चेतना के संदर्भ में जीवन मूल्यों की पुनर्स्थापना पर बल दिया है। इस प्रकार यशपाल के उपन्यासों में भारत विभाजन की त्रासदी और उसके कारणों का विशद विवेचन है। हिन्दी कथा साहित्य की सामाजिक परम्परा में यशपाल का बहुआयामी व्यक्तित्व है। वे एक बड़े लेखक क्रांतिकारी और समाजवादी चिंतक है उनकी विराटता का मूलस्त्रोत भारतीय समाज है जिसे उन्होंने अपनी रचनाधर्मिता में सदैव प्रमुखता से स्थान दिया है। यशपाल ने राष्ट्रीय स्वाधीनता आंदोलन को बहुत ही करीब से देखा भोगा और महसूस किया है। यही कारण है कि यशपाल ने देश विभाजन की त्रासदी का आँखों देखा हाल अपने युगीन समाज को झूठा-सच के माध्यम से यथार्थ रूप में प्रस्तुत किया है। इनके उपन्यासों में झूठा-सच देश विभाजन की त्रासदी का जीवन्त रूप प्रस्तुत करता है। इन्होंने यह संदेश दिया है कि स्वार्थी शासक वर्ग की नीति का परिणाम साम्प्रदायिकता सामाजिक विद्रूपता लूट अत्याचार बलात्कार आदि है। साम्राज्यवादी औपनिवेशिक राज्य, देशी राज्य और शासक वर्ग के शोषण से मुक्ति के लिये संघर्ष आवश्यक है। इससे नीतियों में परिवर्तन होता है। देश का भविष्य जनता के हाथ में है। जनता ही सच का इतिहास रचती है। सत्य की विजय होती है। देश विभाजन की त्रासदी की पीड़ा का निवारण सत्यबोध से ही संभव हैं अस्तु यशपाल देश विभाजन की त्रासदी और उसके चित्रण में सफल रहे हैं।

संदर्भ

1 झूठा-सच, यशपाल, पृ.क्रं. 252.
2. यशपाल का उपन्यास साहित्य, डॉ.गोपाल कृष्ण शर्मा 79
3.वही 80
4. वही ,81
5.भारत वर्तमान और भावी, रजनी पामदत्त, 289
6.भारत विभाजन और हिन्दी कथा साहित्य, डॉ.प्रमिला अग्रवाल